P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-5* August- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

# साहित्य में नारी जीवन–अनुभूति एवं अभिव्यक्ति

**नीतू शर्मा**
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
आई0 टी0 पी0 जी0 कालेज,
लखनऊ

**सारांश**

भारतीय पितृसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय रही है। नारी की त्रासदी, दबाव पीड़ा, और परम्पराओं का बोझ उसके व्यक्तित्व को चिंतन क्षमता को सीमित एवं संकुचित करने का भरसक प्रयास करता रहा है। लेकिन नारी उन सबके बीच से जूझकर अपनी संकल्प एवं इच्छाशक्ति से आगे बढ़कर अपने लिये एक नवीन मार्ग खोजती आई है।

**मुख्य शब्द :** नारी जीवन, पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था ।

**प्रस्तावना**

रचना–प्रक्रिया के अन्तर्गत कथ्य के साथ ही साथ अनुभव का बड़ा महत्व होता है जिसे कहानीकार पाठक तक प्रेषित करता है 'देह की कीमत' एक बार फिर होली', मुट्ठी भर रोशनी', मुझे मार डाल बेटा', ईंटों का जंगल, कब्र का मुनाफा', (समीक्ष्य) कहानी संग्रह में संग्रहीत कुल बारह कहानियां है इन कहानियों से तेजेन्द्र शर्मा की सतत कथा यात्रा अनेक पड़ावों से गुजरी है। निश्चय ही यह कथा–स्वभाव उनकी प्रगतिशील सोच से उत्सर्जित है। इसका कारण यही है कि वे किसी पूर्वाग्रह से नहीं लिखते, न ही किसी सैद्धान्तिक पूर्वाग्रह से, न ही किसी नैतिक पूर्वाग्रह से, उनके पास जीवन के विपुल अनुभव है।

असल में त्रासदी की शुरूआत अंतविरोधो से भरपूर इन्हीं विशेषणों से हुई है जो स्त्री से उसकी मानवीयता इयत्ता छीन पुरूष की मनोदृष्टि से देखी जाने वाली वस्तु बना देती है– अभीप्सित और घृणास्पद। जहाँ हरदीप जैसे पति दो स्पष्ट घोषणा करते पाये जाते हैं कि–''आए तुम जनानियों को मर्दों की बातों में दखल नहीं देना चाहिए। तुम अपना घर संभालों.....बस पैसे कमाना हम मर्दों का काम है। अपने समग्र रूप में ये कहानियाँ पुरूष समाज की इसी इकहरी रूग्ण यादृच्छिक प्रवृत्ति का पुरजोर विरोध हैं तो सूक्ष्म व्यंजना में नारी की मानवीय अस्मिता की सामाजिक–सांस्कृतिक माँग भी। 'अपराध बोध का प्रेत' की सुरभि कैंसर से पीड़ित है, रेडियेशन, कीमोथिरेपी और मौत के डर के बावजूद प्यार की पराकष्टा है सुरभि। 'सुरभि अच्छी पत्नी भी है, अच्छी माँ भी है, अच्छी मित्र भी है अच्छी लेखक भी है।' (पृ0–39) परिवार और अपनी बच्ची की देखभाल के लिए वो अपना कैरियर भी दॉव पर लगा देती है, अन्त में सुरभि लम्बी बीमारी के चलते प्राण त्याग देती है यहाँ मौत तो सिर्फ सुरभि लेखिका होते हुए भी अपनी पहचान इसलिए नहीं बना पातीं क्योंकि आर्थिक स्वावलम्बन के अभाव में नारी अपने ही घर–परिवार में शोषित होती रही है क्योंकि विरोध करने का न उसमें साहस है और न ही सम्बल। नारी पुरूष के लिए समाज ने जो भिन्न–भिन्न प्रतिमान निर्धारित कर रखे हैं उन प्रतिमानों का प्रखर विरोध भी तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में देखने को मिलता है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

संग्रह की प्रारम्भिक दो कहानियों 'देह की कीमत', और अपराध बोध का प्रेत की रचना प्रक्रिया में संवेदना का दृश्य बड़ा प्रमुख है। इन दोनो कहानियों में संवेदना भावुकता से मुक्त हुई है। इन कहानियों की नवीन संवेदना में युग व्यापकता भले ही न हो लेकिन उनमें अभिशप्त जीवन का पीड़ा बोध, पारिवारिक बिखराव के दर्द के प्रति उदासीनता, मजबूरियों, पति–पत्नी और प्रेमी–प्रेमिका के सम्बन्धों में एक सर्द–खामोशी और तटस्थता आ गयी हैं 'देह की कीमत' की नायिका परमजीत आम भारतीय स्त्री के आदर्श रूप की प्रतीक है। पूर्णतया पारम्परिक साँचे में ढली आदर्श महिला। तभी तो सामाजिक सांस्कृतिक ढाँचे में ढली परमजीत 'कन्यादान' जैसी रस्म के सम्बन्ध में विरोध चाहकर भी नहीं जता पाती हैं 'परमजीत को तो कन्यादान से ही वितृष्णा हो उठती थी। दान वाली वस्तु बनना उसे गँवारा नहीं था। इसलिए विवाह कचहरी में करना चाहती थी परन्तु.....विवाह के मामले में बेटियों को नहीं बोलना चाहिए।

संभवतः इसलिए परमजीत बोलना चाहकर भी कुछ नहीं बोल पाई। (पृ0–10) अंधविश्वासों के चलते मंगली होने मात्र से ही विधवा हो जाने का दुर्भाग्यपूर्ण जीवन परमजीत को मिलता है। तेजेन्द्र शर्मा यहाँ समाज को आइना दिखाते हैं कि स्त्रियों की अपनी पहचान इसलिए नहीं क्योंकि न सोच के स्तर पर वे अपना व्यक्तित्व सर्जित करती है, न व्यवहार के स्तर पर अपनी विशिष्ट भूमिका को समाज के सामने ला पाती है? हर स्थिति में समर्पण, स्वीकार और खामोशी।

लेकिन इन 'आत्मघाती हथियारों' के साथ क्या वे चाह कर भी कुछ कर पायेंगी? परमजीत पर जो विधवा होने का बज्रपात होता है उस पर परिवार की तरफ से मिलने वाली चोट उसे कम आहत नहीं करती–''हाय ओए कुड़ी न निकली, डायण निकली, लोको। माप्यों ने अपनी डायण हमारे हवाले कर दित्ती....।'' (पं0–12) यहाँ लेखक ने समय में स्त्री निर्यात और स्त्री जगत के विकृत, भीषण, बीहड़, सत्यों से साक्षात्कार करा देने की दुस्साहसिक यात्रा कराई है जहाँ आँख मूंदकर एक ही सांस में उसे कुलटा और देवी कह देना बहुत आसान हो जाता है।

विभिन्न मानसिकता के दुमुहें समाज में आज की नारी मात्र वस्तु, मात्र सम्पत्ति, विनियम का नाम है? इस प्रश्न को उकेरती 'एक बार फिर होली' की नायिका नजमा क्या आज सिर्फ पुरूष बल के आर्कषण से मुक्ति चाहती है या पुरूष की उस कुत्सित मानसिंकता से भी, जिसने नारी को मात्र भोग्या बना दिया?–''नजमा प्रयत्न भी करती कि इमरान के प्रति उसके मन में कोई कोमल तंतु जन्म ले ले। किन्तु इमरान का फौजी अख्खड़पन उस तंतु को जन्म लेने से पहले ही कुचल देता। उसे रत्तीभर फर्क नहीं पड़ता था कि नजमा क्या महसूस कर रही है। उसे तो अपनी भूख शान्त करनी होती थी जो हो ही जाती थी।''(पृ0–85)

'स्त्रियों की लैंगिकता सदा ही एक लुभावना विषय रही हैं। स्त्री को एक यौन–वस्तु के रूप में देखा जाता है जो दूसरे लैंगिक प्राणियों (पुरूषों) के इस्तेमाल और आस्वादन के लिए है– ''विद्रोही स्त्री''–जर्मन ग्रीयर–पृ0 16 प्रकृति ने बनाए हे नर और मादा शरीर और प्रकृति ने ही बनाई है वासना। सृष्टि ने उत्पत्ति के लिए ही वासना को जन्म दिया है इंसान ने अपने आपको जानवरों से अलग करने के लिए प्रेम जैसी कोमल भावना का आविष्कार किया है'' (पृ0–86) एक बार फिर होली आज के इस उपभोक्तावादी दौर में प्रेम जैसे उच्च मानवीय भाव का अर्थ भी बदल गया है। जो एक तरह की विडम्बना है। अपने वतन हिन्दुस्तान की खुशबू मन में बसाए नजमा पाकिस्तान की सरजमी पर भेज दी जाती है। विवाह बंधन में जकड़ी होने पर अपने वतन का नाम लेना भी उसके लिए पाप था उसे हमेशा सुनने को मिलता– ''नजमा बेटी, तू काफिरों जैसी बातें क्यों करती है। अगर कहीं इमरान के कानों में ये बात पड़ गयी तो गजब हो जाएगा अब तू शादी करके यहाँ आ गयी है बेटी, अपने आपको यहाँ के रस्मों–रिवाज में ढाल मेरी बच्ची। तू भूल जा कि तू हिन्दुस्तान से यहाँ आई हैं अब तू इस घर की इज्जत है। इस इज्जत को बनाए रख बेटी।'' –(पृ0–85) जाहिर है यह वह स्थल है जहाँ सामाजिक संस्थाओं एवं संबंधो के दबाव से ऊपर उठ कर एक जीवंत प्राणी के रूप में स्त्री को अपने बारे में सोचने की आवश्यकता और अवकाश पाना है। यहाँ उभरा सवाल उसे एक ओर विवाह संस्था का पुर्नमूल्यांकन करने की सामर्थ्य देता है–''मुहाजिरों से गई गुजरी''। यह कहने वाला मेरा अपना शौहर है। नजमा कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं थी। पराया देश, पराए लोग। अपना पति भी पराया सा क्यों लगने लगता है। गिद्धों का एक समूह और बेचारी–नजमा।''–(पृ0–81 ) तेजेन्द्र शर्मा ने इमरान को 'एक बार फिर होली' का नायक नही बनाया। नायकत्व दिया है पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था को जो रचना में देश–काल की वृष्टि भी करती है और उद्देश्य का विस्तार भी। जातीय एवं सांस्कृतिक रक्षा के नाम पर यह व्यवसायी स्त्री को स्त्री बनाने के कर्मकाण्ड में जितने मनोयोग से लिप्त है, उतनी ही उद्धतता एवं प्रचण्डता के साथ स्त्री की हर विद्रोही भंगिमा को कुचलने को आतुर भी। ''देखिए बेगम, अल्लाह से डरिए, कुरान–ऐ–पाक भी कहता है कि बीवी को शौहर की बात माननी चाहिए''–(पृ0–80) यह स्थिति नारी को न केवल परवश बनाती है अपितु उसके जीवन को करूणा प्लावित भी करती है। इससे छुटकारा पाने के लिए उसे स्वयं संघर्ष करना पड़ेगा तथा परम्परागत जीवन पद्धति से विद्रोह करना पड़ेगा। मुट्ठी भर रोशनी भरने की एक सराहनीय कोशिश की है जो समाज में सीमा जैसी कई स्त्रियों की समस्याओं के निराकरण के लिए स्पष्ट दर्शन भी है।

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में स्त्री चरित्र की विडम्बना पुरूष चरित्र की सामाजिक देन हैं प्रताड़ना, ऊब, निराशाजन्य भाव, बंधन की छटपटाहट यह सब स्त्री चरित्र की सामान्य विशेषताएं हैं। सामंती समाज में लड़कियों की नियति को बंदी बना देने वाली बेड़ियों और विवशताओं का लेखाजोखा है जिन्हें मूक भाव से शिरोधार्य करने का संस्कार बर्बरता को परम्परा और परम्परा को जातीय अस्मिता का नाम देकर पुख्ता करता चलता है। पुरूष प्रधान समाज की मान्यताओं ने स्त्री को कुछ खास छवियों में जकड़ कर बंद कर दिया है। वो एक अच्छी औरत, अच्छी माँ, बहन या पत्नी अधिक बना दी गयी है। 'मुझे मार डाल बेटा' की माँ वैधव्य के अभिशप्त जीवन से भयभीत है। बाऊजी को पक्षपात होने पर ''उसकी रूलाई जोरों से फूट पड़ी,'' ''जीतू, पुत्तर बेख एह की हो गया! हाय रब्बा। एहनां दी कितने उपवास रखे होंगे। शिव–चालीसा तो पढ़ती ही थी, महामृत्युंजय मंत्र का जाप प्रतिदिन 108 बार करती। न जाने कितने यंत्र और ताबीज अम्बाले से मँगवाए। जब तक अस्पताल वाले बाहर निकलने को न कहते बाऊजी के पास ही रहती। ''वह सामाजिक संरचना है जहाँ विवाह को लड़की का आतयंतिक भविष्य बताकर इसे 'एक पाक और अटूट संस्था' घोषित किया जाता है। पतिव्रता होने का उपदेश देकर विवाह और गुमराह पति को बचाने का गुरू दायित्व निहत्थी स्त्री को सौंपा जाता है। परन्तु विवाह पूर्व जब कोई बहशी किसी स्त्री की अस्मत लूट ले तो दोष किसका हैं? चरित्रहीन कौन है? क्या औरत केवल मर्द के एन्द्रिय सुख का साधन है?

तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'छूता फिसलता जीवन' प्रश्नों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करती है। कहानी की नायिका (मैंडी) जिस पुरूष से प्रेम करती है वही पुरूष (जेम्स) उसका बलात्कार करता है– ''जेम्स ने अपने बल का प्रयोग करके मैंडी को पेड़ों की झुरमुट के नीचे गिरा लिया और वह स्वयं उस पर सवार हो गया। उसके हाथ मैंडी की स्कर्ट और ब्लाउज में घुसते जा रहे थें मैंडी तकलीफ में थी। ''(पृ0 113) यहाँ जर्मेन ग्रीयर की पुस्तक 'विद्रोही स्त्री' का अंश उद्घृत करना अप्रसांगिक न होगा जहाँ मैंडी (मंदीप) के अनुभूत सत्य का सामान्यीकरण करते हुए उन्होंने इसे स्त्री–नियति का.... सत्य बताया है– ''रूढ़ छवि शाश्वत स्त्री है। चिरंतन रमणी।.... उसका महत्व और मूल्य स्थापित होने के पीछे का कारण यह है कि दूसरों में भाग भड़काती हैं मात्र उसका होना ही उसकी भागीदारी का द्योतक है। उपलब्धि की उसे जरूरत नहीं वह तो उपलब्धि का पुरस्कार है।''–(पृ058) इस स्थिति का विस्तार करते हुए जब वे स्त्री को पुरूष की दृष्टि में अपने 'शुक्राणु उड़ेल सकने वाले बर्तन' का नाम देती है तो कहीं भी असंगत या अविश्वसनीय नही लगती है। मैंडी भी जेम्स के बच्चे की माँ बनना स्वीकार कर लेती है। वो अर्न्तद्वन्द से जूझती है। कि ये होने वाला बच्चा मेरा है या जेम्स का। और अन्त मे अबॉर्शन न करवा कर उस बच्चे को जन्म देती है। हमेशा सुनने को मिलता–''नजमा बेटी, तू काफिरों जैसी बातें क्यों करती है। अगर कहीं इमरान के कानों में ये बात पड़ गयी तो गजब हो जाएगा अब तू शादी करके यहाँ आ गयी है बेटी, अपने आपको यहाँ के रस्मों–रिवाज में ढाल मेरी बच्ची। तू भूल जा कि तू हिन्दुस्तान से यहाँ आई है अब तू इस घर की इज्जत है। इस इज्जत को बनाए रख बेटी।''–(पृ0–85) जाहिर है यह वह स्थल है जहाँ सामाजिक संस्थाओं एवं संबंधों के दबाव से ऊपर उठ कर एक जीवंत प्राणी के रूप में स्त्री को अपने बारे में सोचने की आवश्यकता और अवकाश पाना है। यहाँ उभरा सवाल उसे एक ओर विवाह संस्था का पुनर्मूल्यांकन करने की सामर्थ्य देता है–''मुहाजिरों से गई गुजरी''। यह कहने वाला मेरा अपना शौहर है। नजमा कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं थी। पराया देश, पराए लोग। अपना पति भी पराया सा क्यों लगने लगता है। गिद्धों का एक समूह और बेचारी–सी नजमा।''–(पृ0–81) तेजेन्द्र शर्मा ने इमरान को 'एक बार फिर होली' का नायक नही बनाया। नायकत्व दिया है पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था को जो रचना में देश–काल की वृष्टि भी करती है ओर उद्देश्य का विस्तार भी। जातीय एवं सांस्कृतिक रक्षा के नाम पर यह व्यवसाय स्त्री को स्त्री बनाने के कर्मकाण्ड में जितने मनोयोग से लिप्त है, उतनी ही उद्धतता एवं प्रचण्डता के साथ स्त्री की हर विद्रोही भंगिमा को कुचलने को आतुर भी। ''देखिए बेगम, अल्लाह से डरिए, कुरान–ऐ–पाक भी कहता है कि बीवी को शौहर की बात माननी चाहिए''–(पृ0–80) यह स्थिति नारी को न केवल परवश बनाती है अपितु उसके जीवन को करूणा प्लावित भी करती है। इससे छुटकारा पाने के लिए उसे स्वयं संघर्ष करना पड़ेगा तथा परम्परागत जीवन पद्धति से विद्रोह करना पड़ेगा। निःसंदेह यही स्थल है जहाँ अस्मिता शून्य स्त्री अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सामंतवादी व्यवस्था का अंग बनते–बनते उसका पोषण करने लगती है और फिर स्वयं उसमें लय होकर उसका वर्चस्व शाली अंगीभूत रूप। निःसंदेह संवेदना का घनीभूत दबाव पीड़ा और अन्तर्दृष्टि के संधिस्थल पर आकर जिन मानवीय मूल्यों की रक्षा में सन्नद्ध होता है वह देशकाल, घटना चरित्र जैसी बाहरी परतों को बदल–बदल कर अपनी ही अथाह गहराइयों को नाम लेना चाहता है। तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ सम्प्रेषणीयता और पठनीयता में बेजोड़ हैं। उनकी कहानियो की एक और विशिष्टता है – उसका कथा–प्रवाह। उसके विषयों की विविधता। इनकी कहानियों सम्प्रेषणीयता और पठनीयता में बेजोड़ है। उनकी कहानियों की एक और विशिष्टता है– उसका कथा–प्रवाह। उसके विषयों की विविधता। इनकी कहानियों में अंधविश्वास, देश प्रेम, प्रकृतिचित्रण, प्रेम–वासना, लिंगभेद, आधुनिक जीवन की आपाधापी, महंगाई, मुनाफाखोरी, देश विभाजन की त्रासदीं, बलात्कार आदि कई ऐसे विषय है जो अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग पात्रों की संस्कृति का प्रतीक और पहचान है।

**निष्कर्ष**

आधुनिक कहानीकार के रूप में तेजेन्द्र शर्मा ने रचना से आगे आकर जीवन को ही रचना–प्रक्रिया माना है। उनकी कहानियाँ कालखण्ड की कहानी होकर भी समग्र जीवनानुभव की प्रतीति है। यह यथार्थ अनूभूति परख है फलतः अपनी मूल संरचना में 'कब्र का मुनाफा' पुरूषवादी तंत्र के भीतर धंस कर स्त्री स्वतंत्रता की फरियाद करती रचना हैं जो स्त्री विमर्श को भले ही ठोस भूमिका न दे पाए, अपने युग के अर्न्तविरोधों का उजागर अवश्य करती है। तेजेन्द्र शर्मा का यह कहानी संग्रह लेखन स्थिति का क्षणिक उबाल या त्वरित प्रतिक्रिया नही हैं, सत्य को पाने का अखण्ड उपक्रम हैं जो हर रचना के साथ अपनी बीहड़ अन्तर्यात्रा का उद्घाटन करता चलता है। ठहराव नहीं! उपलब्धि का मादक तोष नही सतत् अन्वेषण की व्यग्रता का यथार्थ चित्र है यह संग्रह। समग्रतः तेजेन्द्र शर्मा का लेखन आधुनिक स्त्री की त्रासदीं, संघर्षशीलता और मुक्तिकामी चेतना को गहरी संवेदना और विश्वसनीयता के साथ प्रस्तुत करता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. *साठोत्तरी हिन्दी आलोचना– डॉ0 साहनी 1990 प्रथम संस्करण शिल्पी प्रकाशन इलाहाबाद।*
2. *समकालीन आलोचना– नलिनी उपाध्याय प्रथम संस्करण 1986 मधु माधवी प्रकाशन जयपुर।*
3. *विद्रोही स्त्री– जर्मेन ग्रीयर 2001 राज कमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।*
4. *हिन्दी समीक्षा स्वरूप और संदर्भ–डॉ रामदरश मिश्र।*
5. *समकालीन सृजन संदर्भ– भारत भरद्वाज प्रथम संस्करण 2000 वाणी, नई दिल्ली।*
6. *नई कहानी नये प्रश्न– डॉ0 संतबक्श सिंह 1997 द्वितीय संस्करण श्री नेता प्रकाशन ज्ञानपुर भदोही।*